COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (November)
PP: 7-12
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

तकनीकी दुस्वप्न, डिजिटल चेतना और मानव नैतिकता : ' ब्लैक मिरर ' का समग्र एवं गहन समाजशास्त्रीय दार्शनिक अध्ययन

चमकौर सिंह

शोधकर्ता, सहायक प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ए एस कॉलेज फॉर विमेन, खन्ना

शोध सार :

यह शोधपत्र ब्रिटिश/ अमेरिकन टेलिविजन श्रृंखला ' ब्लैक मिरर ' के सीजन 1 से सीजन 7 , के विशेष एपिसोड्स का विस्तृत , संरचनात्मक और दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, ब्रिटिश मीडिया रचनाकार चार्ली ब्रूकर द्वारा निर्मित यह श्रृंखला यह अन्वेषण करती है कि आधुनिक तकनीक किस प्रकार मानव आकांक्षाओं , भयो, सामाजिक दबावों और नैतिक कमज़ोरियों को विकराल रूप प्रदान करती है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है, कि किस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता,निगरानी पूंजीवाद ,सोशल मीडिया एल्गोरिदम ,डिजिटल चेतना, और आभासी वास्तविकता समकालीन समाज के ढाँचे, मानवीय संबंधों और नैतिक प्राथमिकताओं को पुनर्गठित कर रहे हैं।

(बीज शब्द):

1. ब्लैक मिरर (Black Mirror)2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)3. निगरानी पूंजीवाद (Surveillance Capitalism)4. सोशल मीडिया एल्गोरिदम (Social Media Algorithms)5. डिजिटल चेतना (Digital Consciousness)6. आभासी वास्तविकता (Virtual Reality)7. तकनीकी नैतिकता (Technological Ethics)8. डिजिटल समाज (Digital Society)9. मानव एवं तकनीक संबंध (Human-Technology Relationship)10. समकालीन समाज (Contemporary Society)11. डिजिटल संस्कृति (Digital Culture) 12. तकनीकी नियतिवाद (Technological Determinism)

प्रस्तावना

मनुष्य सभी जीव जन्तुओं में से श्रेष्ठी प्राणी घोषित किया जाता है,वो है या नहीं ,इसपे वाद विवाद हो सकता है, और होना भी चाहिए। क्योंकि श्रेष्ठतम की उपाधि लेने वाला भी वही और इस उपाधि को देने वाला भी स्वयं मनुष्य ही है। इन सभी विचारों को ध्यान में रखते हुए भी यदि बुद्धि के बल पर अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने वाले जीवों में से विद्वजनों की माने तो मनुष्य ही वह प्रजाति है जिसने, अपने और दूसरों के जीवन चरित्र को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है, युवाल नोआ हरारी अपनी पुस्तक , सेपियन्स : अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ह्यूमनकाइंड , में मानव जाति के विकास की कहानी बयाँ करते हैं,

जिसमें वह कहते हैं कि मानवीय विकास केवल शारीरिक और मस्तिष्क तक सीमित नहीं था, उससे ज्यादा मानवीय चेतना का विकास है, जिसमें भाषा, बुद्धि, सामाजिक संगठन, संस्कृति और सभ्यता का विकास महत्वपूर्ण है।

आधुनिक मानव ने लगभग 40 लाख वर्ष पूर्व दो पैरों पर चलने की क्षमता विकसित की, लगभग 24 लाख वर्ष पूर्व मानव द्वारा पत्थर के औजारों का प्रयोग शुरू हुआ, लगभग 19 लाख वर्ष पूर्व आज के मनुष्य द्वारा बेहतर औज़ार और आग का प्रयोग कर अपनी जीवन शैली को बदलते हुए, अफ्रीका से बाहर प्रसार करना शुरू किया। लगभग 3 लाख वर्ष पूर्व आधुनिक मानव का उदय होता है,

युवाल नोआ हरारी के अनुसार, लगभग 70,000 वर्ष पूर्व, मानवीय इतिहास में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ, जिस के चलते , मानव की भाषा, कल्पना और विचार करने की क्षमता ने अन्य प्रजातियों से उसे अलग बनाया।

इन मानसिक शक्तियों के परिणामस्वरूप मानव जटिल भाषाओं से संप्रेषण, भविष्यगत अवधारणाओं की कल्पना करने लगा, मनुष्य में मिथकों धर्म उर समाजिक मान्यताओं का आविर्भाव पैदा हुआ और आपसी बढ़ना संभव हुआ। मानवीय जीवन में अनेकानेक संभावनाओं का विकास तो हुआ, लेकिन उनका जीवन आवश्यकतानुसार अधिक सुखी नहीं हुआ, चेतना के साथ- साथ विभिन्न परिस्थितिजन्य मुश्किलात भी पैदा हुईं।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

यहीं पर हरारी मूल प्रश्न खड़ा करते हैं कि, क्या मानव अपनी बड़ी हुई शक्ति के साथ अधिक बुद्धिमान,अधिक सुखी और अधिक नैतिक भी बन पाया है?

इन्हीं प्रश्नों को मूल बनाकर नेटफ्लिक्स की सीरीज ब्लैक मीरर ,हमारे सामने हमारे भविष्य की विभिन्न जटिल समस्याओं का उदघोष करती हुई दिखती है, जिनके बारे में हमें समय रहते जागरूक तथा चेतन होना अति आवश्यक है।

इस सदी के शुरुआती दो दशकों ने जैसे मानवीय सभ्यता को प्रभावित किया है, वैसे क्रांतिकारी परिवर्तन पूर्व में मानवीय इतिहास में पहले नहीं हुए, यही सबसे बड़ी चिंता है, इंसान जब अपनी चलने की शक्ति से परे जाकर दौड़ने लगता है तो, उस दौड़ से जो समस्याएं पहले धीरे धीरे आती थी,जिन्हें वह समय रहते महसूस कर उनका समाधान करता रहा, वह अनचाहे समय में इतने तीव्रता से सामने खड़ी हो रही हैं कि उनका समाधान सूझना ,मनुष्य के लिए अति मुश्किल होता जा रहा है, जब तक समयस्या की समझ लगती है, तीव्र चाल के प्रकोप में, एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। इन दो दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी , कृत्रिम बुद्धिमता, जैव प्रौद्योगिकी और एल्गोरिदम संचालित प्लेटफार्म्स ,मानवीय सभ्यता में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, जिनसे एक तरफ जहाँ तकनीक ने संचार को सुलभ बनाया है, स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति लाई है और सूचना के लोकतंत्रीकरण की नींव रखी है, वहीं दूसरी तरफ इसने मानव अस्तित्व के मूल चरित्र, सामाजिक ताने-बाने और नैतिक मूल्यों के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। इसी वैचारिक और तकनीकी मोड़ पर ब्रिटिश लेखक और व्यंग्यकार चार्ली ब्रूकर की टेलीविजन श्रृंखला 'ब्लैक मिरर' एक दर्पण के रूप में उभरती है। जिसमें हमारे भविष्य का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। श्रृंखला का शीर्षक 'ब्लैक मिरर' स्वयं उस काले और ठंडे शीशे को संदर्भित करता है जो हर टीवी स्क्रीन, मॉनिटर, स्मार्टफोन और टैबलेट पर तब दिखाई देता है जब उपकरण बंद होता है। यह काला दर्पण केवल कांच और सिलिकॉन का टुकड़ा नहीं है, बल्कि वह स्थान है जहाँ मनुष्य का अपना प्रतिबिंब उसकी तकनीकी सनक, नैतिक गिरावट और नियंत्रण की अतृप्त लालसा के साथ दिखाई देता है।

ब्लेक मिरर की साइंस फिक्शन की कोई काल्पनिक दुनिया नहीं रचता, वह आज की तकनीक से केवल चंद आगे के भविष्य को दिखाकर, हमारे समाज का डरावना और यथार्थवादी रूप हमारे सम्मुख पेश करता है ।

यह शोध पत्र, ब्लैक मिरर के सीज़न 1(जो कि 2011 में प्रसारित हुआ) से लेकर सीज़न 7(2025) तक के स्पेशल एपिसोड 'व्हाइट क्रिसमस' (2014) और ऐतिहासिक इंटरैक्टिव फिल्म 'ब्लैक मिरर: बैंडरस्नैच' (2018) के संपूर्ण परिदृश्य का एक व्यापक अकादमिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध का केंद्रीय तर्क यह है कि ब्लैक मिरर तकनीक को स्वयं में दुष्ट या विद्रोही मानकर उसका विरोध नहीं करता, बल्कि यह दिखाता है कि तकनीक किस प्रकार मानव मन की पहले से मौजूद कमज़ोरियों–जैसे लालच, ईर्ष्या, अलगाव, शक्ति की भूख, और सार्वजनिक तमाशे की हवस–को कई गुना बढ़ा देती है।

"निगरानी पूंजीवाद' की अवधारणा: प्रो. जुबॉफ ने 'सर्विलांस कैपिटलिज्म' शब्द को गढ़ा और लोकप्रिय बनाया है। उनके अनुसार, यह डिजिटल अर्थव्यवस्था का एक ऐसा नया रूप है जहाँ गूगल, फेसबुक और अन्य बड़ी टेक कंपनियाँ उपयोगकर्ताओं के निजी अनुभवों, व्यवहारों और डेटा को उनकी जानकारी के बिना चुपके से इकट्ठा करती हैं। फिर इस डेटा का उपयोग इंसानी व्यवहार की भविष्यवाणी करने और उसे व्यावसायिक लाभ के लिए कंपनियों को बेचने में किया जाता है।" 1

ब्लैक मिरर के एपिसोड्स जैसे 'नोज़डाइव' , 'जॉन्स इज ऑफुल' , और ' कॉमन पीपल' इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं कि कैसे जीवनचर्या के लिए निर्मित उच्च तकनीकों के माध्यम से डाटा एकत्रित कर व्यक्ति की भावनाओं और यहाँ तक कि व्यक्ति के स्वरूप को व्यावसायिक मुनाफे के लिए कमोडिफाई किया जाता है।

"फ्रांसीसी दार्शनिक और समाजशास्त्री जीन बॉद्रियार्ड द्वारा दी गई 'हाइपर-रियलिटी' की अवधारणा समकालीन दर्शन और मीडिया अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। जिसमें हाइपर-रियलिटी एक ऐसी स्थिति है जहां चेतना वास्तविक और काल्पनिक के बीच का अंतर करने में असमर्थ हो जाती है। इस स्थिति में, वास्तविकता का स्थान उसके "आभास" या "प्रतीकों" द्वारा ले लिया जाता है, और यह नकली दुनिया हमें असली दुनिया से भी अधिक वास्तविक लगने लगती है।"2

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

ब्लैक मिरर में, जब डिजिटल प्रतियाँ ('कुकीज़'), वर्चुअल रियलिटी गेम्स ('स्ट्राइकिंग वाइपर्स', 'प्लेटेस्ट') या मरणोपरांत सिमुलेशन ('सैन जुनिपेरो', 'बी राइट बैक') जैसे एपिसोड्स में पात्रों को काल्पनिक दुनिया, वास्तविक भौतिक दुनिया से अधिक वास्तविक महसूस होने लगती है, वहाँ पर बॉद्रियार्ड का सिद्धांत पूर्णतः चरितार्थ होता दिखाई देता है।

"मिशेल फूको ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "डिसिप्लिन एंड पनिश" (1975) में पैनऑप्टिकॉन की अवधारणा का उपयोग आधुनिक समाज में निगरानी, शक्ति और नियंत्रण को समझाने के लिए किया है। मूल रूप से, पैनऑप्टिकॉन का डिज़ाइन 18वीं शताब्दी के अंत में दार्शनिक जेरेमी बेंथम द्वारा एक आदर्श जेल के रूप में तैयार किया गया था। लेकिन फूको ने इसे केवल एक जेल के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के एक प्रतीक के रूप में देखा।" 3

फूको ने पैनऑप्टिकॉन सिद्धांत को स्थापित करते हुए कहा कि इसकी बनावट जेल में केंद्रीय मीनार की तरह होती है, जहां बैठ कर पहरेदार चारों तरफ बनी जेल कोठरियों पर नज़र रखता है ,लेकिन कैदियों को कभी पता नहीं चलता कि पहरेदार कब और कहां से उनपर नज़र रखे हुए है, उन्हें निरंतर निगरानी के भ्रम के परिणामस्वरूप कैदी खुद ही अपने आप की निगरानी करना शुरू कर देते हैं, जिससे शक्ति का अंतरिकरण होना शुरू हों जाता है, अब बाहरी शक्ति से किसी को कंट्रोल करना जरूरी न होकर, मनुष्य स्वयं अंतः शक्ति के कंट्रोल में आ जाता है। फूको के अनुसार पैन ऑप्टिकन से ही स्कूल, अस्पताल, कारखाने और सैन्य बैरक, सभी इसी तर्ज पर काम करते हैं जहाँ हाजिरी, सीसीटीवी, परीक्षा और समय-सारणी के जरिए लोगों को नियंत्रित किया जाता है।

आज के डिजिटल युग में पैन ऑप्टिकन सिद्धांत और भी प्रासंगिक हो चुका है यहां पर इंटरनेट, सोशल मीडिया, एल्गोरिदम और स्मार्टफोन के जरिए कंपनियाँ और सरकारें हमारे हर कदम पर नज़र रखती हैं, आज लोग खुद अपनी जानकारी (लोकेशन, तस्वीरें, विचार) साझा करते हैं, जिससे एक 'अदृश्य पैनऑप्टिकॉन' का निर्माण होता है।

'ब्लैक मिरर' के सीज़न 3 का एपिसोड 'नोज़डाइव' और सीज़न 4 का 'आर्कएंजेल' इस बात का जीवंत उदाहरण हैं कि कैसे डिजिटल रेटिंग और लगातार गार्जियन मॉनिटरिंग समाज को एक आभासी जेल में बदल देती है जहाँ हर नागरिक एक-दूसरे का पहरेदार बन जाता है।

द नेशनल एंथम

'ब्लैक मिरर'श्रृंखला का पहला एपिसोड ही दर्शक को एक विचलित करने वाले नैतिक संकट में धकेल देता है।जिसमें ब्रिटिश प्रधानमंत्री को ब्रिटिश राजकुमारी के अपहरण के बदले ,मानवीय नैतिकता को तार तार करते हुए राष्ट्रीय टी वी पर आकर ऐसा जघन्य काम करने को कहता है, जिसके बारे में सभ्य समाज सोच भी नहीं सकता, अपहरणकर्ता ब्रिटिश प्रधानमंत्री को लाइव आकर, एक सूअर से शरीरिक संबंध बनाने का आदेश देता है, यह एपिसोड तकनीक की खराबी को नहीं, बल्कि सोशल मीडिया के युग में जानकारी के अनियंत्रित प्रसार और आधुनिक जनता के तमाशा-प्रिय स्वभाव को उजागर करता है। और देश का प्रधानमंत्री सोशल मीडिया के मायाजाल में अपने आप को फड़फड़ाता महसूस करते हैं, और यह एपिसोड इस यथार्थिक परिस्थितियों को उजागर करती है कि वर्तमान की राजनीति , नीतियों से नहीं, बल्कि वायरल जनमत के निर्णयों पर टिक चुकी है।

'फिफ्टीन मिलियन मेरिट्स' एपिसोड हमारे समाज का ऐसा क्रूर चित्र प्रदर्शित करता है, जहां हमारा जीना मारना सोशल मीडिया निर्धारित करता है, इसमें एक ऐसे समाज की कल्पना है यहां, मनुष्य जिम साइकल चलाकर डिजिटल मुद्रा अर्जित करता है, जिससे उसके जीने की मूल वस्तुओं की प्राप्ति होती है, उसका खाना - पीना, रहना, अन्य जरूरी वस्तुएं, उस डिजिटल मुद्रा पर आश्रित हैं जिन्हें वो साइकल चलाकर ही प्राप्त के सकता है, और एपिसोड का अभिनेता जब इस व्यवस्था से विद्रोह कर, अपनी स्वयं की हस्ती का एहसास करवाने की चेष्टा में आकर, मंच पर आकर आत्म हत्या की धमकी देता है तो जज उसके इस विद्रोह को ही मनोरंजन शो बना देता है, यह एपिसोड पूँजीवाद की उस क्षमता को दर्शाता है जिसके तहत वह अपने विरोध और विद्रोह को भी बिकने योग्य उत्पाद में बदल देता है। सोशल मीडिया के इस प्रभाव हम साक्षात आज के मनुष्य के सोशल अकाउंट पर देख सकते हैं, यहां मनुष्य की बुरी से बुरी हरकत, जघन्य अपराध, अनैतिक कार्य, पूंजीवादी व्यवस्था ने पैसा कमाने और मनोरंजन का औजार बना दिए हैं, लड़कियां अपने जिस्म की नुमाइश कर धन अर्जित कर रही हैं और उपभोगी उन पर पैसा उछाल के आनंद का अनुभव करते हैं।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

मनुष्य जन्म से मरण तक जीवन में सुखद और कटु अनुभवों के जीते हुए, जीवन यापन करता है, प्रकृति ने मानवीय मस्तिष्क की संरचना ऐसे बनाई है कि वह समय के साथ अपनी कड़वी यादों से निज़ात पा लेता है, यदि ऐसा न हो तो मनुष्य ,अपने कटु अनुभवों से कभी बाहर न निकल पाए और जीवन को आगे न बढ़ा पाए, मन के इन जालों को दूर करने के लिए मानवीय प्रकृति हमारे जीवन में सुखों और दुखों में संतुलन बनाई रखती है, ' ब्लैक मिरर ' के एपिसोड 'द एंटायर हिस्ट्री ऑफ यू' मनुष्य आधुनिक तकनीकों से उस संतुलन को बिगड़ते हुए दिखाई देता है ,जिसमें कान के पीछे लगे छोटे उपकरण 'ग्रेन' के माध्यम से लोग अपनी हर याद को 4 के गुणवत्ता में रिकॉर्ड और रीप्ले कर सकते हैं। एक पति (लियाम) अपनी पत्नी की संदिग्ध बेवफाई की यादों को बार-बार देखकर पागलपन की हद तक पहुँच जाता है। यह एपिसोड साबित करता है कि परिपूर्ण स्मृति मानवीय रिश्तों में क्षमा और भूलने की क्षमता को नष्ट कर देती है, जिससे ईर्ष्या और आत्म-विनाश का जन्म होता है।

'बी राइट बैक' एपिसोड आधुनिक समाज, जिसमें सभी लोग सोशल मीडिया के प्रभाव में इतना तल्लीन हो चुके हैं, यहां पे सच और झूठ का अंतर करना ही मुश्किल हो चुका है, फोन की स्क्रीन ही उनकी वास्तविक जिंदगी बन चुकी है, इंसानों की इसी सोशली मदहोशी उतरने का काम इस एपिसोड के माध्यम से निर्देशक करता हुआ दिखाई देता है, ' बी राइट बैक ' शीर्षक एपिसोड में , अपने पति एश की अकाल मृत्यु के बाद, मार्था एक ऐसी तकनीक का उपयोग करती है जो उसके पति के सोशल मीडिया पोस्ट्स और डिजिटल इतिहास का विश्लेषण करके उसकी आवाज़ और व्यक्तित्व का पुनर्जन्म करती है। बाद में यह एक सिंथेटिक रोबोट का रूप ले लेती है। हालाँकि रोबोट बाहर से एश जैसा दिखता है, लेकिन उसमें मानवीय सूक्ष्मताओं, अप्रत्याशितता और आत्मा का अभाव है। यह एपिसोड सोशल मीडिया से एडिक्टेड लोगों के समक्ष बड़े गंभीर और गहरे प्रश्न और उनका गहरा उत्तर भी प्रस्तुत करता है, जिन लोगों का दिन- रात सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर्स को फॉलो कर, उनके जैसा जीवन जीने की चाहत में लगा रहता है, उनके सामने यह वास्तविकता रखता है कि जो सोशल मीडिया पे दिखता है या दिखाया जाता है वह किसी व्यक्ति का सच नहीं होता, सोशल मीडिया पे लोग अपने उस पक्ष को प्रदर्शित करते हैं जो वो दिखाना चाहते हैं, इस लिए सोशल मीडिया पे दिखाई देने वाला मनुष्य वह नहीं होता ,जो उसका वास्तविक रूप होता है, आज के रिश्तों में, खास कर युवाओं के जीवन को इस आभासी व्यक्तित्व के कारण , रिश्तों में गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, आज के युवाओं के रिश्ते सोशल मीडिया के अकाउंट से बनते हैं, और जब वास्तविक परिस्थितियों में उन रिश्तों को निभाने का समय आता है,तब वह रिश्ते खाली काग़ज़ की तरह दिखाई देते हैं, जिनके टूटने में वक्त नहीं लगता।

'द वाल्डो मोमेंट ' एपिसोड सूचना प्रोद्योगिकी से लैस हमारे आधुनिक समाज की उस व्यंग्मय व्यवस्था पर कटाक्ष करता है, यहां पर राजनीति, नीतियों या नेताओं से निर्धारित नहीं होती, वहां पर आज , राजनीति , मीम्स, रील, कार्टूनों(काकरोच जनता पार्टी) से प्रभावित और संचालित होती दिखाई देती है। इस एपिसोड में , एक अशिष्ट कार्टून भालू 'वाल्डो', जिसे एक कॉमेडियन नियंत्रित करता है, उप-चुनाव में उम्मीदवार बन जाता है। जनता पारंपरिक राजनेताओं के ढोंग से तंग आकर इस मजाक को वोट देने लगती है। यह एपिसोड आधुनिक समय के राजनीतिक लोकलुभावनवाद, मीम-राजनीति का आईना हमारे सामने प्रस्तुत करता है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण, भारत के मुख्य न्यायाधीश के कहे एक शब्द, ' काकरोच ' के प्रतिरोध में अमेरिका से जन्मी एक सोशल मीडिया पर निर्मित 'काकरोच जनता पार्टी ' जिसके घंटों में करोड़ों फॉलोअर बन जाना और दिनों में ही, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र , भारत की बारह साल से स्थापित सरकार के केबिनेट मंत्री का अस्तीफा प्राप्त कर लेना।

'व्हाइट क्रिसमस' यह ब्लैक मिरर के सबसे महान एपिसोड्स में से एक माना जाता है। इसमें दो तकनीकें प्रस्तुत की गई हैं: पहली, 'ज़ेड-आई' जो लोगों को वास्तविक जीवन में एक-दूसरे को 'ब्लॉक' करने की सुविधा देती है (जिससे दूसरा व्यक्ति एक ग्रे धुंधला साया बन जाता है); और दूसरी, 'कुकी' , जो व्यक्ति के मस्तिष्क की डिजिटल प्रतिलिपि बनाकर उसे घर के काम करने वाला एआई दास बना देती है। एपिसोड का अंत डिजिटल चेतना के लिए अनन्त काल की सजा की भयावहता को उजागर करता है।

प्लेटेस्ट , न्यूरो-टेक्नोलॉजी पर आधारित एक प्रायोगिक हॉरर गेम जो खिलाड़ी के अपने दिमाग के सबसे गहरे डरों को पढ़ता है और उन्हें लाइव सिमुलेशन के रूप में दिखाता है। यह एपिसोड वर्चुअल रियलिटी और न्यूरो-लिंक जैसी तकनीकों के मनोवैज्ञानिक खतरों को दिखाता है जहाँ दिमाग वास्तविक और काल्पनिक डर के बीच अंतर करने की क्षमता खो बैठता है।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

'शट अप एंड डांस' एपिसोड हमारे आधुनिक तथा तकनीकयुक्त समाज की यथार्थवादी स्थिति को प्रदर्शित करता है, जिसमें मनुष्य अपने मस्तिष्क उन नकारात्मक संरचनाओं को जागृत कर, मानवीय मूल्यों को तार तार कर, वेबकैम को हैक कर, आपतिजनक वीडियो बना कर , ब्लैकमेल करता है, और यह एपिसोड आधुनिक समाज को समझने की कोशिश करता है कि हम जितना इस अंतर्जाल के गुलाम बनते जा रहे हैं ,और उतने ही उसकी नकारात्मक प्रवृत्तियों के द्वारा इसकी कठपुतली बनते जा रहे हैं।

सैन जुनिपेरो ब्लैक मिरर के आशावादी और भावनात्मक एपिसोड्स में से एक। सैन जुनिपेरो एक ऐसा आभासी तटीय शहर है जहाँ बुजुर्ग या मृत लोग अपनी चेतना को अपलोड करके 80 या 90 के दशक के युवाओं के रूप में अमर जीवन जी सकते हैं। यह प्यार, मृत्यु, और डिजिटल मोक्ष के गहन दार्शनिक प्रश्नों की व्याख्या करता है।

'मेन अगेंस्ट फायर' एपिसोड, मनुष्य को इंसान से राक्षस बनाने की प्रक्रिया का साक्षात उदाहरण है, हमारा आध्यात्मक साहित्य मानवीय मूल्यों, द्वेष , नफ़रत दूर करने और भ्रातृभाव पैदा करने का लक्ष्य लेकर चलता है और है , पूंजीवादी मनुष्य ,युद्धों को अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूर्ण करने का जरिया बनाता जा रहा है, जिसका परिदृश्य हमें अमेरिका - ईरान -इजरायल युद्ध, रूस यूक्रेन युद्ध दिखाई देता है।इस एपिसोड में नई तकनीक से सैनिकों के दिमाग में 'मास' नामक न्यूरल इम्प्लांट लगाया जाता है, जिससे उन्हें दुश्मन नागरिक डरावने राक्षसों ('रोचेस') के रूप में दिखाई देते हैं, ताकि वे बिना किसी नैतिक हिचकिचाहट के उनका कत्लेआम कर सकें। यह सैन्य तकनीक के माध्यम से अमानवीकरण और प्रोपेगैंडा का चरम रूप है। 'हेटेड इन द नेशन' शीर्षक एपिसोड, डिजिटल भीड़ , ट्रोलिंग और इंटरनेट पर जवाबदेही के अभाव को दिखाता है।

ब्लैक मिरर लगातार यह दर्शाता है कि आधुनिक मनुष्य यह भ्रम पाले हुए है कि वह अपने फैसले खुद ले रहा है। चाहे 'हेंग द डीजे' का डेटिंग ऐप हो, 'नोज़डाइव' की सोशल रेटिंग हो या 'बैंडरस्नैच' की निर्णय प्रक्रिया–हर जगह एल्गोरिदम मनुष्य की सोच को आकार दे रहे हैं। तकनीक ने विकल्प की स्वतंत्रता देने का वादा किया था, लेकिन उसने मनुष्य को एक पूर्वानुमानित डेटा पॉइंट बनाकर रख दिया है।

निष्कर्ष एवं भावी दृष्टिकोण

ब्लैक मिरर केवल एक मनोरंजक टीवी श्रृंखला नहीं है; यह इक्कीसवीं सदी की तकनीकी संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण अकादमिक और नैतिक दस्तावेज़ है। चार्ली ब्रूकर की यह कृति हमें चेतावनी देती है कि तकनीक स्वयं में कोई दानव नहीं है–यह केवल एक विशाल दर्पण है। यदि दर्पण में दिखाई देने वाली छवि विकृत, क्रूर और चिंताजनक है, तो दोष शीशे का नहीं बल्कि उस चेहरे का है जो उसमें देख रहा है। यह शोध पत्र यह निष्कर्ष निकालता है कि जैसे-जैसे हम जनरेटिव एआई, न्यूरालिंक, डीपफेक, और मेटावर्स के युग में गहराई से प्रवेश कर रहे हैं, ब्लैक मिरर की चेतावनियाँ काल्पनिक न रहकर हमारा दैनिक यथार्थ बनती जा रही हैं। यदि हमने तकनीक के विकास के साथ-साथ नैतिक नियमों, प्राइवेसी सुरक्षा, और मानवीय संवेदनाओं को प्राथमिकता नहीं दी, तो हमारी सभ्यता अनिवार्य रूप से इनमें से किसी न किसी तकनीकी दुःस्वप्न का शिकार बन जाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Juboff, S. (2019). The Age of Surveillance Capitalism. PublicAffairs.
2. Baudrillard, J. (1994). Simulacra and Simulation. University of Michigan Press.
3. Foucault, M. (1977). Discipline and Punish: The Birth of the Prison. Pantheon Books.
4. Brooker, C. (Creator). (2011–2025). Black Mirror [TV Series]. Zeppotron, House of Tomorrow, Broke and Bones, Netflix.
5. Zuboff, S. (2019). The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for a Human Future at the New Frontier of Power. PublicAffairs.
6. Baudrillard, J. (1994). Simulacra and Simulation. University of Michigan Press.
7. Foucault, M. (1977). Discipline and Punish: The Birth of the Prison. Vintage Books.
8. Han, B.-C. (2017). Psychopolitics: Neoliberalism and New Technologies of Power. Verso Books.

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

9. Turkle, S. (2011). Alone Together: Why We Expect More from Technology and Less from Each Other. Basic Books.
10. McRobbie, A. (2008). The Implications of Black Mirror for Contemporary Media Theory. Media Culture & Society, 30(4), 512-529.
11. Netflix Tudum & IMP Awards Archives. (2025). Black Mirror Official Episode Documentation & Production Notes.